E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 3, Issue- 4 | April 2026

अरुणाचल प्रदेश के हिन्दी कथा-साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन

नैनुंग नोनांग [1], डॉ. बृजेश कुमार [2]

[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा परिसर - 797004

[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा परिसर – 797004

सारांश

यह शोध पत्र हिन्दी कथा-साहित्य के परिप्रेक्ष्य में उल्लेखित ग्रामीण जीवन का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पर्वतीय प्रांत अरुणाचल प्रदेश छोटे-छोटे गाँवों से घिरा हुआ आदिवासियों का निवास-स्थल है, जहाँ विस्तृत समाज की विविधता देखी जाती है। इन्हीं गाँवों की परंपराओं, विचारों आदि के अंतर्गत हिंदी कथा-साहित्य की रचना होती है। ग्रामीण जीवन की सामाजिक व्यवस्था से परिपूर्ण कथा-साहित्य की सृष्टि इन कथाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अर्थात इन साहित्यों में उनकी सामाजिक व्यवस्था, परंपराएँ, जीवन-मूल्य आदि की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति हुई है। अरुणाचल प्रदेश के कथा-साहित्य लेखक के विचारों, भावों तथा नैतिक बोध की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। हिन्दी कथा-साहित्य में समाज में प्रचलित भावनाओं के साथ-साथ समाज-सुधार की आकांक्षा भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

बीज शब्द- अरुणाचल प्रदेश, आदिवासी, ग्रामीण जीवन, स्त्री, व्यवस्था, परंपरा, संस्कृति, जनजातीय।

प्रस्तावना

अरुणाचल प्रदेश आदिवासी बहुल राज्य है, जहाँ के निवासी विभिन्न जनजातीय समुदायों से संबंध रखते हैं। यहाँ 28 मुख्य जनजातियों के साथ-साथ अनेक उप-जनजातियाँ भी पाई जाती हैं, जो उन्हें अन्य जातियों से भिन्न विशेषताओं के साथ विशिष्ट पहचान प्रदान करती हैं। इस क्षेत्र की अपनी कोई लिपि न होने के कारण इसका प्रारम्भिक साहित्य मुख्यतः असमिया और अंग्रेज़ी में उपलब्ध होता है। हिंदी से परिचित होने के पश्चात कुछ स्थानीय साहित्यकारों ने हिंदी में लेखन आरंभ किया। हिंदी में स्थानीय लेखन-परंपरा का आरंभ 'जुमसी सीरम' से माना जाता है, जिन्होंने सर्वप्रथम हिंदी और नागरी लिपि को अपने साहित्य की भाषा के रूप में स्वीकार किया। उनके उपन्यासों और अन्य कृतियों ने हिंदी साहित्य-जगत को प्रभावित किया तथा अरुणाचल की जनजातीय संस्कृति, परंपरा और परिवेश को आधार बनाकर हिंदी पाठकों को समृद्ध किया।

इनके अतिरिक्त अरुणाचल के अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकार हिंदी में सक्रिय हैं, जो ग्रामीण जीवन और सामाजिक यथार्थ पर आधारित कहानियाँ लिख रहे हैं। प्रमुख रूप से जोराम यालम, जमुना बीनी आदि साहित्यकारों की रचनाएँ उल्लेखनीय हैं। इनकी कहानियाँ हिंदी कथा-जगत के शिरोमणि प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ 'रेणु' और नागार्जुन की परंपरा के निकट प्रतीत होती हैं, क्योंकि इनमें अरुणाचल के ग्रामीण जीवन, लोक-संस्कृति और जनजातीय समाज का मार्मिक चित्र उभरकर आता है।

डॉ रिनु एलिजाबेथ फिलिप लिखती है – *"साहित्य और समाज में स्वतंत्रता प्राप्ति प्रत्येक गाँव की भूमिका रही है।*

Published: 24 April 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i4.45693
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

लेकिन स्वतंत्रता के बाद गाँव का महत्व कम होने लगी है।" [1] अर्थात हिंदी कथा-साहित्य में भी कथाएँ ग्रामीण जीवन पर आधारित रही हैं, यद्यपि धीरे-धीरे कथा-साहित्य साठोत्तरी दौर से आगे बढ़कर समकालीन सामाजिक कथाओं की ओर उन्मुक्त होने लगा। वस्तुतः ये कथाएँ स्वतंत्रता के बाद रचित हैं, जिनमें कथाओं के स्वरूप से ग्रामीण जीवन में परिवर्तन होता हुआ दिखाई देता है।

अरुणाचल प्रदेश का ग्रामीण जीवन पशुपालन तथा कृषि-कर्म पर आधारित होता है। विभिन्न जनजातियों और संस्कृतियों के संगम स्थल होने के कारण अरुणाचल प्रदेश के कथा-साहित्य में भी विभिन्न भू-भागों की संस्कृतियों पर आधारित कथाएँ देखने को मिलती हैं। अंग्रेज़ी शासन द्वारा अपनाई गई अलगाव की नीति के कारण अरुणाचल प्रदेश स्वतंत्रता पश्चात भी विकास और सुविधाओं से दूर था। 1961 की जनगणना तक सम्पूर्ण अरुणाचल को ग्रामीण क्षेत्र माना गया था, जबकि 1971 की जनगणना में चार स्थानों में शहरी विशेषताएँ पाई गईं। इसके बाद धीरे-धीरे शहर, जिले आदि बनने लगे। वर्तमान समय तक इस प्रदेश में अनेक छोटे-छोटे कस्बे विकसित हो चुके हैं।

अरुणाचल प्रदेश के कथा साहित्य का प्रारंभिक स्वरूप असमिया और अंग्रेज़ी भाषा में दिखाई देता है, किंतु धीरे-धीरे हिन्दी लोगों की लोकप्रिय भाषा बनती गई और हिन्दी में भी साहित्यिक सृजन आरंभ हुआ। हिन्दी में मौलिक लेखन का आरंभ करने का श्रेय 'जुमसी सीरम' को जाता है, जो हिन्दी में अपने लेखन कार्य की शुरुआत से लेकर अब तक निरंतर सृजनरत हैं। उनके कथा-साहित्य हैं – मेरी आवाज सुनो, मातमुर जामोह आदि । 'मेरी आवाज़ सुनो' उपन्यास गालो जनजाति की रूढ़िवादी परंपराओं पर आधारित *न्येप-न्यिदा* प्रथा के अंतर्गत दो प्रेमियों के अधूरे मिलन की कथा प्रस्तुत करता है। वहीं 'मातमुर जामोह' एक ऐतिहासिक घटना पर आधारित काल्पनिक मिश्रित कथा है। इस प्रकार हिन्दी में कथा-साहित्य के लेखन की यात्रा यहीं से आरंभ हुई और समय के साथ अनेक लेखक एवं लेखिकाएँ हिन्दी में अपनी रचनाएँ करने लगी हैं।

मूल आलेख

अरुणाचल प्रदेश में हिन्दी कथा-साहित्य का लेखन अपेक्षाकृत कम हुआ है, किंतु जो कथा-साहित्य उपलब्ध है, वह अत्यंत प्रभावशाली और महत्त्वपूर्ण है। अरुणाचल की विभिन्न जनजातियों के कुछ लेखकों ने पड़ोसी राज्य की भाषा असमिया में लेखन किया है, तो कुछ ने अंग्रेज़ी भाषा में। इन रचनाओं के हिन्दी अनुवाद भी देखने को मिलते हैं।

इस अनुवाद-परंपरा के प्रमुख उदाहरण 'येसे दोरजी ठोंगची' और 'लूम्मर दाई' के विवेच्य उपन्यास- *मौन होंठ मुखर हृदय*, *सोनम*, *कन्या मूल्य* तथा *शव काटने वाला आदमी* हैं। इन उपन्यासों की मौलिक रचना असमिया भाषा में की गई थी, किंतु ये इतने लोकप्रिय हुए कि इसका अनुवाद हिन्दी में किया गया।

कन्या मूल्य उपन्यास बेटी की कीमत लेकर उसे जबरन विवाह के बंधन में बाँधने की प्रथा पर आधारित है। इस कथा का मुख्य केंद्र 'कन्या मूल्य' से जुड़ा सामाजिक संदर्भ है, जिसमें एक ओर परंपरागत सामाजिक संस्कारों में जकड़े पिता का दायित्व-बोध है, तो दूसरी ओर अपनी पुत्री के प्रति उसका स्नेह। इसी द्वंद्व के माध्यम से कथानक आगे बढ़ता है।

कथा का अंत सुखांत है, जहाँ पीड़ित पात्र गुम्बा को उसके पिता द्वारा कन्या मूल्य लौटाकर मुक्त कर दिया जाता है। इस उपन्यास के अनुवादक 'मुनीन्द्र मिश्र' लिखते हैं- "प्रस्तुत उपन्यास निश्चित रूप से गालो समाज की श्रेष्ट कल्पना है अरुणाचल प्रदेश में जागरण के अगुआ के रूप में गालो समाज का विशेष स्थान है। इसी को दर्शाया है

1 फिलिप, डॉ. रिनु एलिजाबेथ, समकालीन हिन्दी कहानियों में गाँव, विद्या प्रकाशन,2023,कानपुर- 5

श्री लूम्मेर दाई ने।" [2] अर्थात यह उपन्यास गालो समाज की प्राचीन ग्रामीण परंपराओं एवं प्रथाओं से संबंधित एक कथानक पर आधारित है।

'येसे दोरजी ठोंगची' के उपन्यास राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। साहित्यिक आंदोलन के क्षेत्र में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें 'पद्मश्री सम्मान' से भी अलंकृत किया गया है। उनके कुछ उपन्यासों पर फ़िल्में भी बनी हैं। उनके साहित्य में उपन्यास, लघु कथाएँ आदि विविध विधाएँ देखने को मिलती हैं। वस्तुतः अरुणाचल प्रदेश के कथा-साहित्य का महत्त्व उनके रचनात्मक योगदान से स्पष्ट रूप से प्रतिपादित होता है। अरुणाचल प्रदेश के विख्यात लेखक येसी दोरजी थोंग्ची के उपन्यासों में *मौन होंठ मुखर हृदय* विशेष उल्लेखनीय है। यह उपन्यास गाँव से आए मज़दूरों के जीवन, संघर्षों तथा प्रेम-संबंधी भावनात्मक द्वंद्वों पर आधारित है। अतः इसे रोमांटिक उपन्यास की श्रेणी में रखा जा सकता है। मौन होंठ मुखर हृदय' न्यीशी जनजाति तथा मोनपा जनजाति के चरित्रों पर आधारित उपन्यास है। 'सोनम' मोनपा समाज की उप-जनजाति 'ब्रोकपा' पर केंद्रित है, जबकि 'शव काटने वाला आदमी' मोनपा समाज पर आधारित कथा प्रस्तुत करता है।

उनके साहित्य में उपन्यास, लघु कथाएँ आदि विविध विधाएँ देखने को मिलती हैं। वस्तुतः अरुणाचल प्रदेश के कथा-साहित्य का महत्त्व उनके रचनात्मक योगदान से स्पष्ट रूप से प्रतिपादित होता है। हिन्दी अनुवादकों के प्रयासों के कारण अरुणाचल प्रदेश की पृष्ठभूमि में रचा गया यह साहित्य हिन्दी साहित्य के व्यापक क्षेत्र तक पहुँच सका। उनका लेखन केवल अरुणाचल प्रदेश तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि राज्य के बाहर भी पाठकों द्वारा व्यापक रूप से सराहा गया है।

'येसे दोरजी ठोंगची' के रचनाओं में विशेष रूप से मोनपा समुदाय का चित्रण मिलता है, जो बौद्ध धर्म को मानने वाला समुदाय है। इस संदर्भ में उनके लेखन में एक विशिष्ट सांस्कृतिक विलक्षणता दृष्टिगोचर होती है। यद्यपि उन्होंने अरुणाचल प्रदेश की अन्य जनजातियों को भी अपने उपन्यासों के कथानकों में स्थान दिया है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि अरुणाचल प्रदेश के कथा-साहित्यकारों की लेखनी का प्रारंभिक प्रवाह मुख्यतः असमिया और अंग्रेज़ी भाषाओं में रहा। इसके पश्चात हिन्दी का आविर्भाव हुआ और वर्तमान समय में हिन्दी में भी कुछ उल्लेखनीय कथा-साहित्य उपलब्ध होने लगा है। इसके अतिरिक्त हिन्दी में कई लोक-कथाओं की रचना तथा मौलिक उपन्यास और कहानी रचना भी मिलती हैं।

अरुणाचल प्रदेश की जनजातियों के परिवेश से जुड़ी ग्राम-कथाएँ ग्राम-जीवन और संवेदनाओं की प्रस्तुति में विशिष्टता लिए हुए हैं। अरुणाचल प्रदेश के मौलिक हिंदी कथा-साहित्य के क्षेत्र में 'जोराम यालम' और 'जमुना बीनी' का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है। इनके कहानी-संग्रहो में ग्राम्य जीवन की मार्मिकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। स्त्री कथाकार होने के कारण दोनों लेखिकाओं के कथा साहित्य में स्त्री-अनुभवों और स्त्री-पक्ष की विशेष उपस्थिति दिखाई देती है; तथापि ग्रामीण जीवन के संदर्भ में वे दोनों लेखक जनजातीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों और जीवन-स्थितियों का प्रभावशाली उद्घाटन करते हैं। उनकी कहानियों में एक ओर जनजातीय नारी जीवन के विविध पक्ष उभरकर सामने आते हैं, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण समाज की सरलता, सौंदर्य और सामुदायिक भावनाओं का सुंदर समन्वय भी दृष्टिगोचर होता है।

इनकी कहानियाँ यथार्थपरक हैं और अरुणाचली जनजातियों के जीवन-जगत की संवेदनाओं की कुशल अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती हैं। इन कथाओं की भाषा सरल और शुद्ध हिंदी है, जिसके कारण अन्य भाषाई पृष्ठभूमि वाले पाठक

[2] कन्या मूल्य, दाई, लूम्मेर, एल.डी. पुब्लिकाशंस,2006, ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश)

भी आसानी से उनसे जुड़ सकते हैं। ग्रामीण समाज से संबंधित कहानियाँ प्रायः ग्रामीण जीवन पर आधारित होती हैं। ऐसी कहानियों में ग्रामीण लोगों की समस्याएँ, आचार–विचार, जीवन-पद्धति और सांस्कृतिक व्यवहार प्रमुख रूप से प्रतिबिंबित होते हैं।

अरुणाचल प्रदेश की हिंदी कहानियाँ न केवल समस्याओं को उजागर करती हैं, बल्कि उनके संभावित समाधानों को भी अभिव्यक्त करती हैं। 'उसका नाम यापि था' कहानी में यापि को ससुराल से सम्मान नहीं मिलता और उसका पति तारो दूसरी पत्नी ले आता है। इस स्थिति में यापि समाज की पारंपरिक मर्यादाओं को तोड़ देती है, जिसका प्रभाव तारो और उसके परिवार पर भी पड़ता है। अंततः तारो तथा उसके परिजन अपने द्वारा स्थापित मूल्यों को भूलकर यापि को स्वतंत्रता देने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

हिंदी कहानियों में ग्रामीण जीवन प्रायः संयुक्त परिवार की संरचना के साथ चित्रित होता है, जहाँ पारिवारिक संबंध, कलेश, निर्णय-प्रक्रिया और सगे–सम्बन्धियों की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। इसके विपरीत अरुणाचल प्रदेश के समाज में एकल और संयुक्त - दोनों प्रकार की पारिवारिक संरचनाएँ मान्य हैं। अरुणाचल की कहानियाँ किसी एक परिवार तक सीमित न होकर संपूर्ण ग्राम-समुदाय को एक परिवार के रूप में प्रस्तुत करती हैं। यहाँ कहानी का केंद्र केवल एक परिवार की समस्या नहीं होती, बल्कि पूरा गाँव एक सामाजिक इकाई की तरह कार्य करता है और समस्याएँ सामूहिक रूप से अनुभव की जाती हैं।

इस कारण अरुणाचली कहानियों में पारंपरिक पारिवारिक कलेश, सगे-संबंधियों के विवाद या घरेलू तनाव जैसे सूक्ष्म विषय प्रमुखता से नहीं दिखाई देते। इसके स्थान पर परिवार की समस्या सीधे ग्रामीण समुदाय से जुड़कर अभिव्यक्त होती है। 'बांस का फूल' कहानी में लालिन की परिस्थिति देखकर पूरा गाँव उसकी यात्रा रोकने और उसके द्वारा लाई गई अनाज-संपदा में सहयोग की अपेक्षा करता है। इसी प्रकार 'अयाचित अतिथि' में पूरा गाँव एकजुट होकर अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करता है।

अर्थात अरुणाचल की कहानियों में समस्या केवल परिवार की नहीं होती, बल्कि पूरे ग्रामीण समाज की होती है और उसका समाधान भी सामूहिक स्तर पर सामने आता है। इन कहानियों में सूक्ष्म पारिवारिक चित्रण की अपेक्षा व्यापक, समष्टिगत सोच और सामुदायिक जीवन की विशेषताएँ अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

कथा-साहित्य ग्रामीण जीवन की परंपराओं का सजीव चित्रण करता है। ग्रामीण समाज में पारंपरिक संगठन जनजातीय व्यवस्था का एक प्रमुख अंग होते हैं, जो अनेक बार कथाओं के केंद्रीय विषय के रूप में उभरते हैं। 'उस रात की सुबह', 'अयाचित अतिथि', 'कन्या मूल्य' आदि रचनाओं में इसका स्पष्ट उदाहरण मिलता है।

अरुणाचल प्रदेश के ग्रामीण समाज में प्रत्येक जनजातीय समूह की अपनी पारंपरिक संस्थाएँ होती हैं, जो न केवल गाँव की न्याय-व्यवस्था का संचालन करती हैं, बल्कि सामाजिक और प्रशासनिक कार्यों का भी निर्वहन करती हैं। इन्हें 'केबाँग', 'बुलियांग', 'पा' आदि नामों से जाना जाता है।

'कन्या मूल्य' उपन्यास की कथावस्तु का आरंभ 'केबाँग' से होता है और उसी में उसका समापन भी होता है। गुम्बा/याबा नामक बालिका को बचपन में ही कन्या मूल्य लेकर बेचे जाने से संबंधित विषय पर 'केबाँग डेरे' (शयनगृह) में चर्चा–परिचर्चा होती है। गुम्बा की प्रतिक्रिया और उसके विरोध के बावजूद किसी ठोस निर्णय तक न पहुँच पाने की स्थिति में कथा का विकास इसी द्वंद्व पर केंद्रित रहता है।

इस प्रकार ग्रामीण समाज में व्याप्त अनैतिक मूल्यों तथा न्याय-व्यवस्था की रूढ़िवादिता इस उपन्यास की प्रमुख विषयवस्तु बनकर उभरती है।

'जंगली फूल' उपन्यास पर टिप्पणी करते हुए हरीश कुमार शर्मा 'अप्रतिम का सौंदर्य *जंगली फूल*' में लिखते हैं- *"जंगली फूल डॉ जोराम यालम नाबाम द्वारा लिखित एक विशिष्ट उपन्यास है। इस उपन्यास में एक मिथकीय चरित्र को मानवीय चरित्र के रूप में ढालकर प्रस्तुत किया गया है। इसको हम आंचलिक कोटि का उपन्यास मान सकते है। एक नवीन कथा-भूमि और उसके वैशिष्टयपूर्ण चित्रण से इसका संबंध है।"*[3] अर्थात, इस उपन्यास में तानी समूह के पूर्वज 'अबोतानी' को मानवीय चरित्र का रूप देकर उनके संस्कृति–चिंतन, लोक–जीवन, आस्था, परंपराओं और रीति–रिवाज़ों का सशक्त चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

इसके अतिरिक्त 'कन्या का मूल्य' और 'मेरी आवाज सुनो' सामाजिक उपन्यास हैं। *कन्या का मूल्य* में ग्रामीण रूढ़िवादी पारंपरिक व्यवस्था के कारण उत्पन्न स्त्री–पुरुष संबंधी समस्याओं को कथानक का आधार बनाया गया है। *मेरी आवाज सुनो* ग्रामीण समाज में प्रचलित कुरीति 'नेप्प न्यिदा' पर केंद्रित एक प्रभावशाली सामाजिक कथा है। 'शव काटने वाला आदमी' और 'सोनम' को मनोवैज्ञानिक उपन्यास की श्रेणी में रखा जा सकता है। *शव काटने वाला आदमी* का कथानक दर्गेय नामक ग्रामीण पात्र की मानसिक अवस्थाओं और उसकी मनोवैज्ञानिक उलझनों के इर्द-गिर्द घूमता है। *सोनम* उपन्यास में सोनम और उसके दो पतियों के मध्य मनोवैज्ञानिक त्रिकोण कथा का मूल आधार बनता है।

इसी तरह 'मातमुर जामोह' अपने आप में एक ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें स्वतंत्रता सेनानी मातमुर जामोह के जीवन, संघर्ष और क्रांतिकारी योगदान को कथानक का केंद्र बनाया गया है। इस उपन्यास में इतिहास, आंदोलन और क्रांतिकारी स्वभाव की प्रवृत्तियाँ प्रमुखता से उभरती हैं।

'मेरी आवाज़ सुनो' उपन्यास गालो जनजाति की रूढ़िवादी परंपराओं पर आधारित *न्येप–न्यिदा* प्रथा के अंतर्गत दो प्रेमियों के अधूरे मिलन की कथा प्रस्तुत करता है। वहीं 'मातमुर जामोह' एक ऐतिहासिक घटना पर आधारित काल्पनिक मिश्रित कथा है।

कथा-साहित्य में तानी समूह के समाज में प्रचलित बहुविवाह, अनमेल-विवाह तथा बाल-विवाह जैसी सामाजिक समस्याओं का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। ये समस्याएँ वर्तमान समय में भी अपने नकारात्मक प्रभाव के कारण गंभीर सामाजिक प्रश्न के रूप में उभरकर सामने आती हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक संघर्ष, परंपराएँ, रूढ़िवादी मान्यताएँ तथा अस्तित्व की पहचान जैसे विषयों पर आधारित कथा-साहित्य भी पर्याप्त रूप में उपलब्ध है।

अन्य जनजातियों में भी बहुविवाह की प्रथा देखने को मिलती है। उदाहरणस्वरूप, जमुना बीनी की वांचो जनजाति पर आधारित कथा 'फिफोट' एक युवती फिफोट की करुण गाथा प्रस्तुत करती है। इस कथा में बूढ़े वाङहम (मुखिया/राजा) की कुदृष्टि उस पर पड़ती है और पिता द्वारा वाङहम के चौथे विवाह के प्रस्ताव पर उसे जबरन विवाह के बंधन में बाँध दिया जाता है।

ग्रामीण कथाओं में बेटियों को प्रायः त्याग और शोषण का शिकार होते हुए दर्शाया गया है। लगभग प्रत्येक कथा में स्त्री को शोषित वर्ग के रूप में चित्रित किया गया है। चाहे रचनाकार पुरुष हों या स्त्री, आदिवासी जनजातीय समाज में स्त्री के आचार-विचार और जीवन को संघर्षरत स्थिति में प्रस्तुत किया गया है।

अन्य आदिवासी क्षेत्रों की भाँति अरुणाचल प्रदेश के ग्रामीण समाजों में भी स्त्री का जीवन प्रायः दयनीय स्थिति में दिखाई देता है। 'फिफोट' कहानी में लेखिका ने कथा-क्रम के माध्यम से फिफोट के चरित्र के साथ-साथ वांचो

[3] https://nayidhara.in/gadya-dhara/hindi-article-apratim-soundarya-ka-jangali-phool-by-harish-kumar-sharma/

ग्रामीण समाज के परिवेश और संस्कृति का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। वांचो जनजाति में गोदना गुदवाने की परंपरा प्रचलित है। लेखिका ने कहानी का आरंभ गोदना गुदवाने की प्रथा से किया है, जिससे कथानक अधिक रोचक और प्रभावशाली बन पड़ा है।

कथा का प्रारंभ फिफोट को पारंपरिक रूप से गोदना गुदवाने की तैयारी से होता है, जिसके माध्यम से यह जानकारी भी प्राप्त होती है कि गोदना लड़की के छह वर्ष की आयु में कराया जाता है, पुनः उसके माहवारी के समय, फिर ससुराल में प्रवेश के अवसर पर तथा पहली बार गर्भवती होने पर। अर्थात् गोदना ग्रामीण समाज में एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक परंपरा है। गोदना-संस्कृति अरुणाचल प्रदेश की अन्य जनजातियों में भी देखने को मिलती है। जिसके पीछे अनेक मान्यताएं और कथाएं प्रचलित हैं।

अरुणाचल प्रदेश की वांचो जनजाति में अनेक परंपराएँ प्रचलित हैं और इस जनजाति की सामाजिक व्यवस्था अन्य जनजातियों से कुछ भिन्न दिखाई देती है। यह जनजातीय समुदाय चार वर्गों में विभक्त है- वाङहम, वांगशा, वांगशु और वांगपन। इनमें वाङहम को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है, जिन्हें स्थानीय समाज में प्रायः 'राजा' कहकर संबोधित किया जाता है। "इस कबिलाई समाज का सबसे ऊपर और 'प्रीवीलेज्ड' वर्ग है-वाङहम । मानवशास्त्रीय अध्ययनों में वाङहम के लिए मुखिया संबोधन प्रयुक्त किया गया है । लेकिन मैंने थोड़ी लिबर्टी लेते हुए अपनी कहानियों में 'मुखिया' शब्द का प्रयोग न करके, 'राजा' शब्द का प्रयोग किया । क्योंकि मुखिया का पद यहाँ अनुवांशिक होता है। और भी 'मोनार्की' के अन्य 'फिचर्ज' मुझे इस समाज में दृष्टव्य हुए।"[4]

कहानी-संग्रह की कथा 'फिफोट' में फिफोट के माता-पिता द्वारा पहली कटाई के नए चावल की टोकरी वाङहम को अर्पित करने की परंपरा का उल्लेख मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि समाज में वाङहम को विशेषाधिकार प्राप्त है। इसी प्रकार 'अयाचित अतिथि' कहानी में वाङहम के निधन पर पूरे गाँव को शोक-संताप में डूबा हुआ दर्शाया गया है। वहीं 'नालाई' कहानी में वांचा कुल की नालाई को केवल लड़की होने के कारण वाङहम के पुत्र आनोक के साथ विवाह के बंधन में बाँध दिया जाता है, जहाँ कथा इस प्रथा से जुड़े आंतरिक द्वंद्व को उजागर करती है। अतः यह स्पष्ट होता है कि वांचो समाज की यह सामाजिक व्यवस्था कथा-साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में उभरकर सामने आती है।

इस प्रकार कथा-साहित्य विभिन्न जनजातियों के ग्रामीण समाज और उनके परिवेश को अभिव्यक्त करता है। जिस विशिष्ट जनजाति पर कथाएँ आधारित होती हैं, वे उसी जनजातीय समुदाय की सामाजिक संरचना, परंपराओं तथा गतिविधियों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती हैं।

अरुणाचल प्रदेश की कथाओं में सामाजिक, पौराणिक तथा ऐतिहासिक भेद के विविध स्वरूप देखने को मिलते हैं। कुछ कथाएँ समाज में प्रचलित कुरीतियों, रूढ़ियों एवं सामाजिक घटनाओं से जुड़ी होती हैं, जबकि कुछ रचनाएँ इतिहास से ग्रहण किए गए प्रसंगों के कारण ऐतिहासिक घटना-प्रधान बन जाती हैं। जोराम यालम की रचना *जंगली फूल* तानी समुदाय की जनजातियों की पौराणिक लोक-कथाओं पर आधारित है। अरुणाचल प्रदेश के बहुसंख्यक समाज तानी समूह के अंतर्गत 'अबोतानी' को पाँच प्रमुख जनजातियों का पूर्वज माना जाता है। इस समूह के भीतर अबोतानी से संबंधित अनेक लोक-कथाएँ प्रचलित हैं। तिब्बत के दक्षिणी क्षेत्र में निवास करने वाली लोभा जनजाति में भी अबोतानी से जुड़े मिथक और मान्यताएँ देखने को मिलती हैं। इसी कारण तानी समाज में अबोतानी के अस्तित्व का विशेष महत्त्व है। अपनी पुस्तक *जंगली फूल* में उपन्यासकार ने इसी मिथकीय अबोतानी को केंद्रीय स्थान प्रदान

[4] अयाचित अतिथि और अन्य कहानी, बीनी, जमुना, समय साक्ष्य, 2021, देहरादून-14

करते हुए, जनजातीय वातावरण की पृष्ठभूमि में उपन्यास का सृजन किया है।

'मिनाम' उपन्यास एक भिन्न प्रकृति की कृति है, जिसमें कथा-विन्यास के साथ-साथ लेखिका मोरजुम लोई ने गालो जनजाति के ग्रामीण सामाजिक रहन-सहन का विस्तारपूर्वक चित्रण किया है। इस उपन्यास का पूर्ण शीर्षक *मिनाम : एक आदिवासी स्त्री की संघर्ष कथा* है। यह अरुणाचल प्रदेश के तानी वंश की प्रमुख जनजाति गालो समाज की एक स्त्री पर आधारित कथा है; किंतु वस्तुतः यह केवल एक स्त्री की कहानी नहीं है, बल्कि कथानक के विकास के साथ अनेक स्त्रियों के विविध सामाजिक संघर्षों को उद्घाटित करता है। इस उपन्यास के कथ्य के संदर्भ में डॉ. बोम्पी रिबा ने *अरुणाचल टाइम्स* में एक लेख प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने *मिनाम* की तुलना बाल-शोषक युमकेन बागरा के वास्तविक मामले से की है, जिसने एक विद्यालय के छात्रावास में कई बालिकाओं का शोषण किया था। अपने इस लेख में उन्होंने *मिनाम* में चित्रित गालो समाज की सामाजिक व्यवस्था का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया है कि उपन्यास में वर्णित स्त्रियों की स्थिति समाज में प्रचलित संरचनात्मक असमानताओं का परिणाम है।

उनका तर्क यह है कि जिस समाज में स्त्री को द्वितीय दर्जे का स्थान दिया जाता है, वहाँ शोषक उसी मानसिकता का लाभ उठाकर शोषण को अंजाम देते हैं। अर्थात् समाज की संरचना और व्यवस्था व्यक्ति की मानसिकता को गढ़ती है, और वही मानसिकता शोषण जैसी प्रवृत्तियों को जन्म देती है।

गालो ग्रामीण-समाज में एक महत्त्वपूर्ण और रोचक तथ्य यह है कि घर की अपनी विशिष्ट स्थानिक प्रथाएँ होती हैं। अर्थात् प्रत्येक गृह-परिसर के भीतर ऐसे नियम और अनुशासन प्रचलित होते हैं, जो उस स्थान में रहने वाले व्यक्तियों के आचरण को नियंत्रित करते हैं। घर को स्थानिक दृष्टि से विभिन्न कक्षों में विभाजित किया जाता है, जैसे— शयनकक्ष, बैठक कक्ष, रसोईघर, भोजन कक्ष, स्नानगृह तथा बरामदा। इन कक्षों की संरचना और व्यवस्था के अनुरूप निवासियों से अपेक्षित व्यवहार निर्धारित होता है, जो निरंतर अभ्यास और पुनरावृत्ति के माध्यम से सामान्य तथा स्वाभाविक मान लिया जाता है।

निष्कर्ष

अरुणाचल प्रदेश के हिन्दी कथा-साहित्य का स्वरूप मुख्यतः वहाँ की जनजातियों पर केंद्रित है। कथाओं का सृजन अरुणाचल के विशिष्ट भौगोलिक परिवेश तथा जनजातीय समाज के बीच किया गया है। इनमें ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख भी मिलता है, जो प्रायः वास्तविक घटनाओं पर आधारित हैं। कथाओं का स्वरूप अरुणाचल की जनजातियों में प्रचलित परंपराओं और प्रथाओं से संबद्ध है। इस प्रकार इन कथाओं की मूल संवेदना अरुणाचल प्रदेश के सामाजिक परिवेश, संस्कृति और भौगोलिक संरचना से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है।

अरुणाचल प्रदेश का हिन्दी कथा-साहित्य हिन्दी भाषा में राज्य के ग्रामीण जीवन, समाज तथा संस्कृति के विविध परिदृश्यों को अभिव्यक्त करने वाली कथाओं का संकलन है। अर्थात् हिन्दी कथा-साहित्य में इस प्रदेश के विभिन्न जनजातीय समाजों के ग्रामीण जीवन को लेखकों द्वारा चित्रित करने का सफल प्रयास किया गया है। अरुणाचल प्रदेश के स्थानीय लेखकों द्वारा रचित साहित्य अपने परिवेश और सामाजिक परिदृश्य में निहित कथाओं पर आधारित होता है, चाहे वह असमिया, अंग्रेज़ी अथवा हिन्दी भाषा में लिखा गया हो। इन कथाओं के मुख्य पात्र सामान्यतः अरुणाचल प्रदेश के होते हैं, यद्यपि यह इस बात पर निर्भर करता है कि लेखक किस सामाजिक समूह को अभिव्यक्त कर रहा है। बहुजनजातीय संरचना के कारण पात्र जिस समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे प्रायः उसी समाज के नाम और पहचान से जुड़े होते हैं। अरुणाचल प्रदेश का जनजातीय समाज मुख्यतः विभिन्न सामाजिक संगठनों से जुड़ा हुआ है, जिसका चित्रण प्रत्येक कथा-साहित्य में अनिवार्य रूप से किया गया है। कथा-साहित्य में सामाजिक परिवेश प्रायः ग्रामीण समाज का होता है, जिसके माध्यम से वहाँ की वास्तविक संस्कृति और परंपराओं का सजीव

दर्शन प्राप्त होता है। कहानियों तथा उपन्यासों में मुख्यतः ग्रामीण जीवन को ही केंद्रीय विषय के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ये रचनाएँ अपनी पारंपरिक विशेषताओं को विस्तारपूर्वक समेटे हुए हैं। कहानियों में ग्रामीण जीवन साधारण, सरल और प्राकृतिक रूप में चित्रित होता है। ग्रामीण समुदायों की जीवन-पद्धति आधुनिक, शहरी तथा सभ्य समाज की जीवन-शैली से भिन्न होती है। इनके अपने विशिष्ट आचार-विचार, संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था होती हैं। अरुणाचल प्रदेश के जनजातीय समुदाय स्वभाव से स्वतंत्र एवं स्वच्छंद प्रवृत्ति वाले माने जाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. बीनी, जमुना, (2021), अयाचित अतिथि और अन्य कहानी, , समय साक्ष्य, देहरादून
2. दाई, लूम्मेर, (2006) कन्या मूल्य, एल.डी पुब्लिकाशंस,2006, ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश)
3. फिलिप, डॉ. रिनु एलिजाबेथ,(2023), समकालीन हिन्दी कहानियों में गाँव,विद्या प्रकाशन,,कानपुर
4. जोराम, यालाम. (2019). *जंगली फूल.* अनुज्ञा प्रकाशन, दिल्ली.
5. जोराम, यालाम. (2019). *साक्षी है पीपल.* अनुज्ञा प्रकाशन, दिल्ली.
6. थोंगछी, येसे दरजे. (2015). *शव काटनेवाला आदमी.* वाणी प्रकाशक, नई दिल्ली.
7. थोंगछी, येसे दरजे. (2008). *सोनाम.* वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली.
8. थोंगछी, येसे दरजे, मौन होंठ मुखर हृदय, साहित्य अकादेमी,2017,नई-दिल्ली
9. लोई, मोर्जुम. (2020). *मिनाम (एक आदिवासी स्त्री की संघर्ष कथा).* बोधि प्रकाशन, जयपुर.
10. रीबा जोमो, तुम्बम. (2018). *उस रात की सुबह.* पृथ्वी प्रकाशन, नयी दिल्ली.